समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 26 August 2026

UP चुनाव 2027 से पहले अखिलेश यादव की नई रणनीति, PDA के साथ 'सॉफ्ट हिंदुत्व' पर भी बढ़ा फोकस

Sanket Morankar Published on 02 Jul 2026

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2027 से पहले समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने अपनी राजनीतिक रणनीति में बड़ा बदलाव किया है। अब तक पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक (PDA) की राजनीति को प्राथमिकता देने वाले अखिलेश अब 'सॉफ्ट हिंदुत्व' के रास्ते भी आगे बढ़ते नजर आ रहे हैं। मंदिरों में दर्शन, भगवान श्रीराम और सनातन पर लगातार दिए जा रहे बयान, धार्मिक आयोजनों में भागीदारी और राम मंदिर से जुड़े मुद्दों पर मुखर रुख उनकी नई राजनीतिक रणनीति का हिस्सा बन चुके हैं।

राजनीतिक जानकारों का मानना है कि सपा अब अपने पारंपरिक PDA वोट बैंक को मजबूत बनाए रखते हुए हिंदू मतदाताओं के एक वर्ग तक भी पहुंच बनाने की कोशिश कर रही है।

लोकसभा चुनाव के बाद बदली रणनीति

2024 के लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी ने PDA के नारे के साथ उल्लेखनीय सफलता हासिल की थी। इसके बाद पार्टी अब इस सामाजिक गठजोड़ को कायम रखते हुए अपनी राजनीतिक स्वीकार्यता का दायरा बढ़ाने की दिशा में काम कर रही है।

विश्लेषकों के मुताबिक, अखिलेश यादव अब ऐसी राजनीतिक लाइन पर चल रहे हैं, जिसमें सामाजिक न्याय और धार्मिक-सांस्कृतिक पहचान दोनों को समान महत्व दिया जा रहा है।

राम मंदिर पर बदला नजरिया

एक समय भाजपा समाजवादी पार्टी पर राम मंदिर और हिंदुत्व के मुद्दों से दूरी बनाने का आरोप लगाती रही है। लेकिन अब अखिलेश यादव का रुख पहले से अलग दिखाई देता है।

राम मंदिर चढ़ावा चोरी के कथित मामले में उन्होंने ट्रस्ट और सरकार की कार्यप्रणाली पर सवाल जरूर उठाए, लेकिन साथ ही बार-बार यह भी कहा कि "**प्रभु श्रीराम सबके है और हर सनातनी परिवार मे रामदरबार की परंपरा है।**"

उन्होंने भाजपा पर आरोप लगाया कि उसने आस्था और संविधान दोनों के साथ राजनीति की है।

धार्मिक गतिविधियों में बढ़ी सक्रियता

पिछले कुछ महीनों में अखिलेश यादव और उनके परिवार की धार्मिक गतिविधियां भी लगातार बढ़ी हैं।

- विभिन्न मंदिरों में दर्शन
- कन्नौज में केदारेश्वर महादेव मंदिर निर्माण
- डिंपल यादव और बच्चों द्वारा काशी विश्वनाथ सहित कई मंदिरों में पूजा-अर्चना
- सैफई में धार्मिक भंडारे का आयोजन

इन गतिविधियों को सपा की नई राजनीतिक शैली का हिस्सा माना जा रहा है।

PDA और हिंदुत्व के बीच संतुलन

राजनीतिक विशेषज्ञों का कहना है कि अखिलेश यादव के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपने पारंपरिक PDA वोट बैंक को बनाए रखते हुए हिंदू मतदाताओं के एक वर्ग को भी आकर्षित करना है।

इसी वजह से वे एक ओर आरक्षण, सामाजिक न्याय और संविधान की बात करते हैं, तो दूसरी ओर धार्मिक आयोजनों और भगवान श्रीराम जैसे विषयों पर भी खुलकर अपनी राय रखते हैं।

इस रणनीति का उद्देश्य भाजपा को धार्मिक ध्रुवीकरण का पूरा राजनीतिक लाभ लेने से रोकना भी माना जा रहा है।

डिजिटल PDA अभियान पर भी जोर

हाल ही में समाजवादी पार्टी ने '**PDA स्वाभिमान सहयोग अभियान**' शुरू किया है।

इस अभियान के तहत—

- QR कोड के माध्यम से न्यूनतम 20 रुपये का सहयोग
- डिजिटल सदस्यता अभियान
- बूथ स्तर पर संगठन को मजबूत करने की योजना
- नए समर्थकों को जोड़ने की रणनीति

पार्टी का कहना है कि यह केवल फंड जुटाने का अभियान नहीं, बल्कि संगठन विस्तार का माध्यम भी है।

भाजपा के 'हार्ड हिंदुत्व' के मुकाबले नई रणनीति

उत्तर प्रदेश की राजनीति में भाजपा लंबे समय से राम मंदिर, काशी, मथुरा, सनातन और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद जैसे मुद्दों को प्रमुखता देती रही है।

इसके विपरीत समाजवादी पार्टी अब हिंदुत्व का सीधा विरोध करने के बजाय धार्मिक आस्था को स्वीकार करते हुए भाजपा पर आरोप लगा रही है कि उसने आस्था का राजनीतिक इस्तेमाल किया है।

राजनीतिक विश्लेषक इसे सपा की '**सॉफ्ट हिंदुत्व**' **रणनीति** मान रहे हैं।

धार्मिक प्रतीकों और सांस्कृतिक संदेशों पर भी फोकस

अखिलेश यादव ने हाल के महीनों में सार्वजनिक मंचों से ज्योतिष, धार्मिक मान्यताओं और शुभ-अशुभ संकेतों का भी उल्लेख किया है।

उन्होंने प्रयागराज में रात्रि विश्राम, मंदिर दर्शन और सनातन परंपराओं का जिक्र करते हुए अपनी नई राजनीतिक छवि को और मजबूत करने की कोशिश की है।

साथ ही उन्होंने अपने कार्यकर्ताओं को धार्मिक मामलों पर विवादित बयान देने से बचने की भी सलाह दी है, ताकि भाजपा को कोई राजनीतिक मुद्दा न मिल सके।

क्या सफल होगी यह रणनीति ?

राजनीतिक विश्लेषकों की राय इस मुद्दे पर बंटी हुई है।

एक वर्ग का मानना है कि यदि समाजवादी पार्टी PDA गठजोड़ को मजबूत रखते हुए हिंदू मतदाताओं के एक हिस्से तक पहुंचने में सफल रहती है, तो 2027 का विधानसभा चुनाव भाजपा के लिए पहले से अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

वहीं, दूसरे विशेषज्ञों का मानना है कि हिंदुत्व के मुद्दे पर भाजपा की वैचारिक बढ़त अभी भी मजबूत है और केवल धार्मिक प्रतीकों के सहारे उसका मुकाबला करना आसान नहीं होगा।

2027 की राजनीति का नया समीकरण

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2027 में मुकाबला केवल जातीय समीकरणों तक सीमित नहीं रहने वाला है। एक ओर भाजपा विकास और हार्ड हिंदुत्व के एजेंडे के साथ चुनाव मैदान में होगी, तो दूसरी ओर समाजवादी पार्टी PDA, सामाजिक न्याय और सॉफ्ट हिंदुत्व के मिश्रण के साथ नई राजनीतिक जमीन तैयार करने की कोशिश कर रही है।

अब यह देखना दिलचस्प होगा कि अखिलेश यादव की बदली हुई रणनीति उत्तर प्रदेश की राजनीति में कितना असर छोड़ती है और क्या यह उन्हें सत्ता तक पहुंचाने में सफल होती है।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Sanket Morankar, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.